पटना उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में

अजय मांझी

बनाम

बिहार राज्य

2019 का आपराधिक अपील (खं. पी.) सं. 125

17 अक्टूबर, 2023

(माननीय न्यायमूर्ति श्री आशुतोष कुमार एवं
माननीय न्यायमूर्ति श्री अलोक कुमार पांडे)

विचार के लिए मुद्दा

क्या भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के अंतर्गत दोषसिद्धि उस स्थिति में विधिसंगत है जहाँ प्रत्यक्षदर्शियों के बयानों में विरोधाभास हो, पुलिस द्वारा गंभीर प्रक्रियात्मक चूक हो तथा अभियुक्त के अपराध से सीधे जुड़ाव का कोई ठोस साक्ष्य या प्रेरणा मौजूद न हो?

हेडनोट्स

गवाहों के बयानों में असंगतियाँ अभियोजन पक्ष के कथन पर संदेह उत्पन्न करती हैं (पैरा 6-24)

कुछ गवाहों ने अन्य व्यक्तियों की संलिप्तता का उल्लेख किया, परंतु उनके विरुद्ध कोई जाँच या अभियोजन नहीं हुआ (पैरा 15-18)

फर्दबयान के संबंध में यह आरोप है कि उस पर एक खाली कागज पर हस्ताक्षर कराए गए थे (पैरा 28)

जांच अधिकारी अस्पताल में स्थानांतरण या समय पर प्राथमिकी दर्ज होने की पुष्टि नहीं कर सका (पैरा 29-31)

अपराध का उद्देश्य केवल कयास पर आधारित रहा; यह प्रमाणित करने के लिए कोई विश्वसनीय साक्ष्य नहीं था कि अपीलकर्ता ने किसी बलिदान की भावना से कार्य किया था (पैरा 44)

न्यायालय ने निष्कर्ष निकाला कि अभियोजन पक्ष उचित संदेह से परे मामला सिद्ध करने में विफल रहा और अपीलकर्ता को संदेह का लाभ देते हुए, लगभग दस वर्षों की कारावास के पश्चात दोषमुक्त कर दिया (पैरा 43-54)

अपील स्वीकृत(पैरा 56)

न्याय दृष्टान्त

(निर्णय में कोई विशेष उदाहरण उद्धृत नहीं)

अधिनियमों की सूची

भारतीय दंड संहिता, 1860, धारा 302; दंड प्रक्रिया संहिता, 1973; भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872

मुख्य शब्दों की सूची

धारा 302 भा.दं.सं.; प्रत्यक्षदर्शी की विश्वसनीयता; प्रक्रियात्मक चूक; फर्दबयान की अनियमितता; प्रेरणा; संदेह का लाभ; दोषमुक्ति; बलि देने का आरोप; पुलिस की शिथिलता; विरोधाभासी गवाही

प्रकरण से उत्पन्न

लखीसराय थाना कांड संख्या 412/2013 से उत्पन्न सत्रवाद संख्या 89/2014 में धारा 302 भा.दं.सं. के तहत दोषसिद्धि।

पक्षकारों की ओर से उपस्थिति

अपीलकर्ता की ओर से : सुश्री सूर्या नीलांबरी (न्यायमित्र)

उत्तरदाता/ओं की ओर से : श्री दिलीप कुमार सिन्हा, अ.लो.अ.

रिपोर्टर द्वारा हेडनोट बनाया गया: अमित कुमार मल्लिक, अधिवक्ता

पटना उच्च न्यायालय का निर्णय/आदेश

पटना उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में

2019 का आपराधिक अपील (खं. पी.) सं. 125

थाना-कांड संख्या-412 वर्ष-2013 थाना-लखीसराय जिला-लखीसराय से उत्पन्न

=====

अजय मांझी पिता भासो मांझी, निवासी- शर्मा टोला मुसहरी, डाकघर-
लखीसराय, जिला-लखीसराय

... ..अपीलकर्ता/ओं

बनाम

बिहार सरकार

... ..उत्तरदाता/ओं

=====

उपस्थिति:

अपीलकर्ता/ओं की ओर से : सुश्री सूर्या नीलांबरी (न्यायमित्र)

उत्तरदाता/ओं के लिए : श्री दिलीप कुमार सिन्हा, अ.लो.अ.

=====

कोरम: माननीय न्यायमूर्ति श्री आशुतोष कुमार

और

माननीय न्यायमूर्ति श्री अलोक कुमार पांडे

मौखिक निर्णय

(प्रति: माननीय न्यायमूर्ति श्री आशुतोष कुमार)

दिनांक:17-10-2023

हमने विद्वान न्यायमित्र सुश्री सूर्या नीलांबरी, जिन्होंने इस जेल अपील में हमारी बहुत कुशलता से सहायता की है और राज्य के विद्वान अ.लो.अ. श्री दिलीप कुमार सिन्हा, को सुना।

2. अपीलकर्ता को दिनांक 18.12.2018 के निर्णय के तहत दोषी ठहराया गया है और दिनांक 20.12.2018 के आदेश के तहत आजीवन कारावास, 50,000/- रुपये का जुर्माना अदा करने और जुर्माना अदा न करने पर भा.दं.सं. की धारा 302 के तहत एक वर्ष के अतिरिक्त कारावास की सजा विद्वान अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश-II, लखीसराय द्वारा लखीसराय पीएस केस संख्या 412/2013 से उत्पन्न सत्र परीक्षण संख्या 89/2014 के संबंध में सुनाई गई है।

3. मृतक सूचना देने वाले (अ.सा.5) का पति है। उसने *फरदबेयान* में आरोप लगाया है, जिसे जांच अधिकारी (अ.सा.6) ने 12.10.2013 को सुबह 07:00 बजे उसके घर पर दर्ज किया था, कि उसने अपीलार्थी को एक *कुदाल* के माध्यम से मृतक पर हमला करते देखा था, जब मृतक एक राज कुमार मांझी (जांच नहीं की गई) के खेत में बैठा था। वह मैदान से कुछ शोर सुनकर घटना स्थल पर आई थी। उसके अनुसार, कई लोग घटना स्थल पर पहुंचे थे, लेकिन अपीलार्थी वहां से भागने में सफल रहा। घायल हालत में उसके पति को सदर अस्पताल ले जाने में ग्रामीणों ने उसकी मदद की, जहां से उसे बेहतर इलाज के लिए एक बड़े अस्पताल में रेफर कर दिया गया, लेकिन रास्ते में ही मृतक की मौत हो गई। इसके बाद उसने अपने पति के शव को अपने घर लाने का दावा किया है। उसने, इसलिए, केवल अजय मांझी (अपीलार्थी) के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था, लेकिन इस तरह की घटना के लिए कोई कारण बताए बिना।

4. उपर्युक्त *फर्दबयान* के आधार पर लखीसराय थाना कांड संख्या 412/2013 दिनांक 12.10.2013 धारा 302 आईपीसी के तहत अपराध के अनुसंधान हेतु पंजीकृत किया गया।

5. विचारण न्यायालय ने अभियोजन पक्ष की ओर से डॉक्टर (अ.सा. 7) और जांच अधिकारी (अ.सा. 6) सहित सात गवाहों से पूछताछ करने के बाद अपीलार्थी को उपरोक्त रूप से दोषी ठहराया।

6. सुश्री सूर्या नीलांबरी हमें सभी गवाहों के बयान पर ले गई हैं और सफलतापूर्वक यह प्रदर्शित करने का प्रयास किया है कि मुखबिर (अ.सा. 5) सहित किसी भी गवाह ने घटना को नहीं देखा था, लेकिन मृतक के गंभीर रूप से घायल होने और शायद उसकी मृत्यु के बाद ही वह उस स्थान पर पहुंचा था।

7. जाटो मांड़ी, लक्ष्मण मांड़ी और रासो मांड़ी, जिनसे क्रमशः अ.सा. 1, 2 और 3 के रूप में पूछताछ की गई है, का नाम सूचक (अ.सा. 5) ने अपनी *फर्दबयान* में घटनास्थल पर आने या मृतक को अस्पताल ले जाने और रास्ते में उसकी मृत्यु हो जाने पर शव को वापस लाने में उसकी मदद करने के रूप में नहीं लिया है। उसने अपनी *फर्दबयान* में केवल इतना कहा था कि ग्रामीणों की मदद से घायल को अस्पताल ले जाया गया और रास्ते में उसकी मृत्यु हो जाने पर शव को वापस लाया गया।

8. उपरोक्त सभी तीन गवाह मृतक और मुखबिर (अ.सा. 5) से सीधे संबंधित हैं।

9. जाटो मांड़ी (अ.सा. 1) के पास बताने के लिए कुछ अलग कहानी थी, जो उनके बयान को बहुत अस्थिर बनाती है। अपने जाँच प्रमुख में, उन्होंने कहा है कि जब मृतक की रास्ते में मृत्यु हो गई, तो शव को वापस

गाँव लाया गया और शव की रखवाली के लिए एक चौकीदार को नियुक्त किया गया था।

10. बाद में, सुबह जब सरकारी विभाग से फ़ोन आया, तभी शव को अगले दिन सुबह 8:00 बजे पुलिस स्टेशन ले जाया गया, और फिर उसे पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। यह घटना क्रम अ.सा. 1 द्वारा सुझाया गया है और रिकॉर्ड में मौजूद दस्तावेज़ों से भी बिल्कुल अलग है। फ़र्दबयान आईओ (अ.सा. 6) द्वारा सूचक (अ.सा. 5) के घर पर ही दर्ज किया गया था।

11. अगर शव को फ़रदबेयान के दर्ज होने से पहले पुलिस स्टेशन ले जाया जाता, तो उसे केवल पुलिस स्टेशन में ही दर्ज किया जाता।

12. इसके अलावा, अ.सा. 1 के बयान के अन्य हिस्सों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया गया है, जिसने यह स्वीकार करते हुए कि मृतक उसका चचेरा भाई था और मृतक और अपीलार्थी के बीच कोई दुश्मनी नहीं थी, कहा है कि लगभग 10 से 15 व्यक्ति घटना स्थल पर जाने से पहले ही पहुंच चुके थे। उन्होंने अपीलार्थी के अलावा, कॉंग्रेस, पूरन और मंगल का नाम लिया है, लेकिन बाद में स्पष्ट किया है कि ये वे व्यक्ति थे जिन्होंने मृतक पर हमला किया था।

13. जिस समय अ.सा. 1 पी. ओ. पहुँचा था, उस समय मृतक घायल अवस्था में था और उसकी हालत बहुत गंभीर थी। उन्होंने अपनी स्थानीय बोली में समझाया है कि उन्होंने मृतक को जीवन के लिए हांफते देखा था और उन्हें ऐसा लगा कि वह मरने वाला था।

14. इसलिए, यह बहुत स्पष्ट करता है कि जब तक अ.सा. 1 घटना स्थल पर पहुंचा था, तब तक हमला पहले ही समाप्त हो चुका था और

मृतक घायल हालत में पड़ा हुआ था, जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहा था। घटना स्थल पर पहुंचने के लगभग पाँच मिनट बाद, अ.सा. 1 ने दावा किया, सूचना देने वाला (अ.सा. 5) घटना स्थल पर आया। अगर उनकी बात मानी जाए तो अ.सा. 5 ने भी यह घटना नहीं देखी होगी।

15. इसी तरह, लक्ष्मण मांझी (अ.सा. 2) ने घटना को देखने का दावा किया है, लेकिन हमले के लिए केवल अपीलार्थी को जिम्मेदार ठहराने के बजाय, उन्होंने मंगल, कॉंग्रेस और पूरन के खिलाफ आरोप लगाए हैं, जिन्होंने अपीलार्थी के साथ मिलकर मृतक को पकड़ लिया था, और अपीलार्थी ने मृतक को कुदाल से मारा। कुदाल द्वारा प्रहार अपीलार्थी द्वारा दोहराया गया था। इसके बाद कई लोग घटना स्थल पर पहुंच गए।

16. अ.सा. 2 द्वारा हमले में भाग लेने के रूप में नामित व्यक्तियों में से किसी से भी या तो पूछताछ नहीं की गई, जांच नहीं की गई या मुकदमा नहीं चलाया गया।

17. उनके अभियोजन से बचने के लिए रिकॉर्ड पर कोई कारण प्रतीत नहीं होता है।

18. उनके द्वारा विकसित एक और कहानी है जो अभियोजन पक्ष के मामले से बिल्कुल भी मेल नहीं खाती है। जब शव को रात में लगभग 10 बजे घर वापस लाया गया, तो अ.सा. 2 ने कहा कि प्रभारी अधिकारी को घटना के बारे में सूचित किया गया था और उन्हें यह भी बताया गया था कि मृतक की मृत्यु हो गई थी। इसके बाद एक चौकीदार की प्रतिनियुक्ति की गई। प्रभारी अधिकारी अगली सुबह 07:00 बजे ही घर आए।

19. अ.सा. 2 के बयान का यह हिस्सा मुख्य अभियोजन पक्ष की कहानी से बिल्कुल अलग है। जिरह के दौरान, उसने यह भी स्वीकार किया

है कि अपीलार्थी की गाँव में अच्छी प्रतिष्ठा थी और वह अ.सा. 2 और गाँव के अन्य व्यक्तियों के भतीजे के रूप में भी संबंधित था।

20. घटना स्थल पर सूचना देने वाले (अ.सा. 5) के आगमन के संबंध में, अ.सा. 2 ने एक स्पष्ट बयान दिया है कि वह स्वयं उसके आने के दस मिनट बाद ही पी. ओ. के पास आई थी। जब तक अ.सा. 5 पी. ओ. पर पहुंचे, तब तक गाँव के लगभग 25 से 30 लोग भी आ चुके थे। अभियुक्त व्यक्ति भी उस समय तक पी. ओ. से भाग चुका था। उनका कभी पीछा नहीं किया गया और न ही उन्हें पकड़ने का प्रयास किया गया।

21. अपने बयान के बाद के हिस्से में, सुश्री सूर्य नीलांबरी दावा करती हैं, अ.सा. 2 इस सच्चाई के साथ सामने आया कि वह खुद पी. ओ. तक पहुँच गया था जब मृतक पहले ही जमीन पर गिर चुका था। वह खाट की कोई व्यवस्था नहीं कर सके, लेकिन ग्रामीणों की मदद से उन्होंने शव को उठाया। घायल व्यक्ति कुछ भी बोलने की स्थिति में नहीं था।

22. अ.सा. 2 के बयान से गुजरने के बाद जो बात हमें प्रभावित करती है, वह यह है कि मृतक को पहले लखीसराय के एक अस्पताल में ले जाने के रिकॉर्ड पर कोई सबूत नहीं है, जहाँ से उसे उच्च उपचार के लिए पी.एम.सी.एच. में भेजा गया था, लेकिन रास्ते में उसकी मृत्यु हो गई और उसके शव को वापस लाना पड़ा।

23. जहाँ तक इस पहलू का संबंध है, अ.सा. 2 का साक्ष्य बिल्कुल संक्षिप्त है। उसका शव को ग्रामीणों के साथ ले जाने का दावा, लेकिन किस स्थान पर, यह अज्ञात है। क्या वह केवल खेत से शव को मृतक के घर ले आया था। अन्यथा मृतक को ग्रामीणों के कंधों पर उठाकर

अस्पताल नहीं ले जाया जाता। इसलिए, अ.सा. 2 द्वारा प्रस्तावित कहानी-रेखा में कुछ गड़बड़ है।

24. इसी तरह, रासो मांझो (अ.सा. 3) ने अपनी जिरह के दौरान कहा है कि जब वह पी. ओ. पहुंचे तो मृतक इतना गंभीर रूप से घायल हो गया था कि वह बोलने की स्थिति में नहीं था। उन्होंने मृतक को घायल अवस्था में खेत में लेटे हुए देखा था। हमलावर पहले ही भाग चुका था। जब वह पी. ओ. पहुँचा तो उसे पता चला कि मृतक पर हमला करने और घायल करने में दो से तीन लोग शामिल थे।

25. बोधु मांझी (अ.सा. 4) से जिरह नहीं की जा सकी क्योंकि वह कभी भी अपनी जिरह के लिए निचली अदालत में पेश नहीं हुए।

26. यह हमें सूचना देने वाले (अ.सा. 5) के बयान पर ले जाता है, जो मृतक की पत्नी है। बहुत उत्सुकता से और पहली बार, उन्होंने निचली अदालत के समक्ष कहा कि उन्होंने एक अफवाह सुनी थी कि अपीलार्थी ने एक समय घोषणा की थी कि मृतक को देवी दुर्गा को खुश करने के लिए बलिदान के रूप में मार दिया जाएगा।

27. यह घटना दुर्गा पूजा के दौरान हुई थी। हल्ला सुनने के बाद, वह घटना स्थल पर गई थी और जब वह वहां पहुंची, तो पहले से ही ही लगभग 100 लोगों की भीड़ जमा थी। पी. ओ. से शव को घर लाया गया। उसने स्वीकार किया है कि उसने जांचकर्ता को बताया था कि कॉंग्रेस, पूरन मांझी, मंगल मांझी और अपीलार्थी ने मृतक पर हमला किया था।

28. ध्यान देने योग्य बात यह है कि उन्होंने पुष्टि की है कि उन्होंने केवल एक कोरे कागज की एक शीट पर अपने अंगूठे का निशान लगाया था, जिसे अंततः उनके *फरदबेयान* में बदल दिया गया था। वह

अपीलार्थी को पहले से जानती थी। वास्तव में, वह उसे बचपन से जानती थी। इसी तरह, जिन व्यक्तियों ने अभियोजन पक्ष के पक्ष में गवाही दी थी, वे सभी उससे संबंधित थे। उसने इस बात से इनकार किया है कि मृतक को चोरी करते हुए पकड़ा गया था और ग्रामीणों ने उस पर हमला किया था जिससे उसकी मौत हो गई थी।

29. सत्येंद्र शर्मा (अ.सा. 6), जो इस मामले के जांचकर्ता हैं, ने बयान दिया है कि वह केवल 12.10.2013 पर घटना स्थल पर गए थे, न कि 11.10.2013 की शाम को, जैसा कि एक गवाह ने दावा किया है। उन्होंने इस बात से भी इनकार किया कि उन्होंने सादे कागज़ पर अ.सा. 5 के अंगूठे का निशान लिया था। उन्होंने मृतक को लखीसराय अस्पताल ले जाने या बेहतर इलाज के लिए किसी दूसरे अस्पताल में रेफर करने का कोई रिकॉर्ड नहीं देखा था।

30. 12.10.2013 को, उन्हें लगभग 06:15 बजे सुबह एक टेलीफोनिक जानकारी मिली थी जिसे उन्होंने स्टेशन डायरी में दर्ज किया था।

31. उस स्टेशन डायरी प्रविष्टि को रिकॉर्ड में नहीं लाया गया है।

32. इस प्रकार, जब घटना की जानकारी अ.सा. 6 तक पहुंची, तो उसे हमलावर का नाम नहीं पता था।

33. पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट और डॉक्टर (अ.सा. 7) के बयान से पुष्टि हुई है कि मौत हत्या थी, जिन्होंने मृतक के शरीर पर तीन घाव पाए हैं; जिनमें से दो खोपड़ी पर और एक गर्दन पर था। बायीं अस्थायी और पार्श्विका हड्डी टूटी हुई पाई गई। कपाल रक्त और रक्त के थक्कों से भरा हुआ था। मस्तिष्क का हिस्सा पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया था। गर्दन की मांसपेशियाँ

और रक्त वाहिकाएँ, साथ ही श्वासनली भी पूरी तरह से क्षतिग्रस्त पाई गई। मौत चोटों और उनसे उत्पन्न न्यूरोजेनिक आघात के कारण हुई थी।

34. हमने यह भी पाया है कि जाँच (प्रदर्श.3) मृतक के घर पर आयोजित किया गया था।

35. सभी गवाहों के बयान के अवलोकन से जो बात सामने आती है वह यह है कि मृतक की मौत चाकू की चोटों से हुई थी। यह घटना 11.10.2013 की रात के कुछ समय में हुई थी।

36. *फरदबेयान* और गवाहों के बयान के अनुसार, मृतक पर राज कुमार मांझी के खेत में हमला किया गया था, जो हालांकि एक गवाह के अनुसार घटना स्थल पर मौजूद थे, लेकिन मुकदमे में उनसे पूछताछ नहीं की गई है। मृतक राज कुमार मांझी के खेत में बैठा था, जब अ.सा. 5 के अनुसार, अपीलार्थी और दो-तीन अन्य लोगों ने उस पर हमला किया था। अक्टूबर माह में मृतक किस कारण से शाम के समय पड़ोसी के खेत में बैठा था, यह अभी तक अज्ञात है।

37. गवाहों के साक्ष्य के आधार से यह भी एकत्र किया जा सकता है कि वे अलग-अलग समय पर पी. ओ. पर पहुंचे थे। हालांकि, वे सभी तभी पहुंचे थे जब हमला हो चुका था और बदमाश भाग गए थे। पी डब्लूएस 1, 2 और 3 ने पी. ओ. पहुंचने का दावा किया जब मृतक पहले ही गंभीर रूप से घायल हो चुका था और अत्यधिक रक्तस्राव के साथ जमीन पर गिर गया था। उन सभी ने यह भी कहा है कि अ.सा. 5/मुखबिर पी. ओ पर पहुंचने से लगभग पांच से दस मिनट बाद पहुंचे। यदि अ.सा. 1, 2 और 3 ने हमले का वास्तविक हिस्सा नहीं देखा था, तब पी डब्लू 5 ने भी हमले को नहीं देखा था।

38. जो बात हमें और अधिक चिंतित करती है वह यह है कि शव की रखवाली एक चौकीदार द्वारा की गई थी। यद्यपि चौकीदार से परीक्षण के दौरान पूछताछ नहीं की गई है, लेकिन यह माना जा सकता है कि उसने यह काम स्वयं नहीं किया होगा, बल्कि किसी उच्च अधिकारी के निर्देश पर किया होगा, जो सम्भवतः संबंधित पुलिस थाने का प्रभारी अधिकारी हो सकता है।

39. गवाहों में से एक ने यह भी कहा है कि चौकीदार को रात में शव की रखवाली के लिए नियुक्त किया गया था। इसलिए, यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि जानकारी पहले ही पुलिस स्टेशन तक पहुंच चुकी थी। यह काफी समझ में आता है कि एक पुलिस अधिकारी, जो अपने काम में बहुत तेज नहीं है, रात में पी. ओ. तक नहीं पहुंच सकता है और केवल सुबह, अगले दिन प्राथमिकी दर्ज करने के लिए पहुंच सकता है। लेकिन वर्तमान मामले में, चूंकि सूचना देने वाला एक अनपढ़ व्यक्ति है, और जब उसके अंगूठे का निशान एक खाली कागज पर लिया गया था, तो फरदबेयान की सामग्री कुछ ऐसी हो सकती थी जो गवाहों द्वारा विशेष रूप से नहीं देखी गई होगी, अ.सा. 5 या उसके द्वारा सुनाई गई होगी। हम ऐसा कई कारणों से कह रहे हैं। मुकदमे के दौरान ही अभियोगी 5 ने अपीलकर्ता द्वारा देवी दुर्गा को प्रसन्न करने के लिए मृतक की बलि देने की घोषणा की कहानी पेश की थी। यह घटना दुर्गा पूजा के दौरान घटी थी।

40. अपीलार्थी के अलावा, गवाहों द्वारा नामित तीन अन्य व्यक्तियों को मृतक पर हमला करते देखा गया। ऐसा प्रतीत होता है कि अ.सा. 5 के अपने फ़र्दबेयान में अन्य लोगों के नाम छोड़ने का कोई कारण नहीं है, अगर फ़र्दबेयान में वही बयान हैं जो उसने दिए थे। यही कारण है कि हमें

संदेह है कि क्या *फरदबेयान* की सामग्री वही थी जो अ.सा. 5 ने मौखिक रूप से कही थी या यह कि यह गवाहों या पुलिस द्वारा बनाई गई थी।

41. किसी पर हमला करने का आरोप लगाने से निश्चित रूप से जांच आसान हो जाती।

42. हमारा मानना है कि प्रत्यक्षदर्शी के बयान के आधार पर आपराधिक मामले में मकसद गौण हो जाता है। लेकिन इस तरह के मामले में, गवाहों के पुलिस स्टेशन पहुँचने और हमला देखने के बारे में अलग-अलग बयानों और घटना के अगले दिन सूचना देने वाली महिला द्वारा पुलिस को एक सादे कागज़ पर अंगूठे का निशान देने के कारण, हम पाते हैं कि अभियोजन पक्ष का आधार काफ़ी कमज़ोर है।

43. हमारे लिए खुद को यह समझाना मुश्किल है कि तीन अन्य व्यक्ति, अर्थात् कॉंग्रेस, मंगल और पूरन को तब बख्शा गया जब उन्होंने भी अपीलार्थी के साथ हमला किया था या कम से कम हमले में भाग लिया था।

44. अ.सा. 5 के अलावा अपीलार्थी के बारे में एक अफवाह सुनने के बाद कि वह देवी दुर्गा को बलिदान देगा और ऐसा बलिदान मृतक का होगा, किसी अन्य अभियोजन पक्ष के गवाह ने हत्या के किसी भी उद्देश्य के बारे में नहीं कहा है।

45. क्या मृतक की मौके पर ही किसी ने हत्या कर दी थी?

46. क्या वह वास्तव में पूजा के दौरान बलिदान का एक उद्देश्य था?

47. क्या उसने अपीलार्थी को इस हद तक अपमानित किया कि उस पर एक कुदाल से हमला किया गया जो घातक साबित हुआ?

48. क्या उसे चोरी करते हुए पकड़ा गया और ग्रामीणों ने उस पर हमला किया, जिसके कारण उसकी मृत्यु हो गई?

49. अभियोजन पक्ष ने दरवाजा इतना खुला छोड़ दिया है कि गवाहों द्वारा अपीलार्थी को मृतक की हत्या करते हुए देखे जाने की किसी भी सुसंगत कहानी के अभाव में यह सब अटकलें लगाई जा सकती हैं।

50. यदि अभियोजन पक्ष के गवाह मृतक से संबंधित थे, तो अपीलार्थी भी उनसे संबंधित था। यह हमें फिर से दुविधा में डालता है। अपीलार्थी को गलत तरीके से फंसाने का क्या कारण हो सकता है?

51. हमें इस अनुमान के अलावा कोई जवाब नहीं मिला है कि यह व्यापार की आसानी के लिए पुलिस का उपयोगी काम है, यानी एक मामले को खोलना और बंद करना और इस तरह कम समय में इसे बंद करना।

52. शायद आई. ओ. ने सोचा कि किसी ने मृतक की हत्या की होगी और इसलिए, इस मामले में किसी को आरोपी बनाया जाना चाहिए। यह सब अटकलों के दायरे में हो सकता है लेकिन एक बात निश्चित है कि मृतक की हत्या 11.10.2013 की रात में की गई थी और अ.सा. 5 और अन्य गवाहों द्वारा जो बताया गया है, वह वास्तव में जो हुआ था उसका पूरी तरह से सही संस्करण नहीं है।

53. इस प्रकार, हमारे पास अपीलार्थी को संदेह का लाभ देने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है जो पहले से ही लगभग दस साल से जेल में है।

54. पूर्वनिर्दिष्ट कारणों से, निर्णय को दरकिनार कर दिया जाता है और अपीलार्थी को उसके खिलाफ लगाए गए आरोप से बरी कर दिया जाता है।

55. अपीलार्थी/अजय मांझी हिरासत में है। उसे तुरंत रिहा करने का निर्देश दिया जाता है जब तक कि किसी अन्य मामले में उसकी नजरबंदी की आवश्यकता न हो।

56. अपील की अनुमति है।

57. इस निर्णय की एक प्रति अनुपालन एवं अभिलेख हेतु संबंधित जेल के अधीक्षक को तत्काल भेजी जाए।

58. इस मामले के अभिलेख तत्काल विचारण न्यायालय को लौटा दिए जाएं।

59. अन्तरवर्ती आवेदन, यदि कोई हों, भी तदनुसार निपटाए जाएं।

60. हमें न्यायमित्र के प्रयासों की सराहना करनी चाहिए तथा उसे रिकार्ड में दर्ज करना चाहिए, जो इस जेल अपील में प्रवेश के चरण से ही अपीलकर्ता का बचाव कर रहे थे।

61. हम उच्च न्यायालय विधिक सेवा प्राधिकरण को निर्देश देते हैं कि वह सुश्री सूर्या नीलांबरी को उनके पेशेवर शुल्क के रूप में 7,500/- रुपये का भुगतान करें, क्योंकि उन्होंने अब तक हमें सहायता प्रदान की है।

(आशुतोष कुमार, न्यायमूर्ति)

(आलोक कुमार पांडे, न्यायमूर्ति)

सौरभकृष्ण/कृष्ण -

खंडन (डिस्क्लेमर)- स्थानीय भाषा में निर्णय के अनुवाद का आशय, पक्षकारों को इसे अपनी भाषा में समझने के उपयोग तक ही सीमित है और अन्य प्रयोजनार्थ इसका उपयोग नहीं किया जा सकता। समस्त व्यवहारिक, कार्यालयी, न्यायिक एवं सरकारी प्रयोजनार्थ, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रमाणिक होगा साथ ही निष्पादन तथा कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ अनुमान्य होगा।